विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 14 | अंक : 56 | दिसंबर, 2021

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा अर्द्ध दिवसीय कार्यशाला : 'हिंदी भाषा और ऑनलाइन शोध'

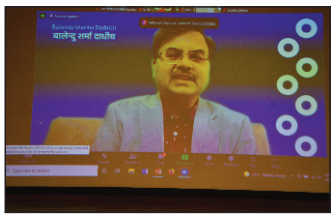

21 अक्तूबर, 2021 को शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में एवं महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार में 'हिंदी भाषा और ऑनलाइन शोध' विषय पर एक अर्द्ध दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। ऑनलाइन कार्यशाला हेतु स्थानीय भाषा और अभिगम्यता माइक्रोसॉफ़्ट, गुड़गाँव, हरियाणा के निदेशक श्री बालेंदु शर्मा दाधीच जी को विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया था।

पृ. 2

वातायन की वैश्विक संगोष्ठी

4 दिसंबर, 2021 को वातायन - यू.के. द्वारा 'अनिल शर्मा 'जोशी' जी का काव्य संसार' विषय पर आधारित वैश्विक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. पद्मेश गुप्त ने स्वागत-भाषण प्रस्तुत किया। विशेष अतिथि के रूप में दोहा सम्राट नरेश शांडिल्य उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने किया।

पृ. 4

सोमदत्त बखोरी पर वेब-गोष्ठि

4 नवंबर, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से आयोजित साप्ताहिक वेब-गोष्ठि के दौरान मॉरीशस के प्रख्यात साहित्यकार श्री सोमदत्त बखोरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा की गई। हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक श्री गंगाधर वानोडे ने अतिथियों का स्वागत किया और डॉ. जवाहर कर्नावट ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

पृ. 5

'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी चुनौती और संभावनाएँ' विषयक राजभाषा सम्मेलन

13-14 नवंबर, 2021 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनारस में 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी चुनौती और संभावनाएँ' विषयक राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय श्री आदित्यनाथ योगी भी उपस्थित रहे।

पृ. 8

'पगडंडियों से आगे' और 'पंचम स्वर' का लोकार्पण

12 दिसंबर, 2021 को सी.डी देशमुख सभागार, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री अशोक पांडे का अभिनंदन समारोह एवं विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित युवा कवयित्री कोमल के दो काव्य-संग्रह 'पगडंडियों से आगे' और 'पंचम स्वर' का लोकार्पण किया गया। फ़िल्म एवं रंगमंच के सुप्रसिद्ध विभूति डॉक्टर संदीप मारवाह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य एवं शिक्षाविद् डॉ. अजय भांबी ने की।

पृ. 10

पुरस्कार व सम्मान समारोह

28 नवंबर, 2021 को लखनऊ में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कार व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नीदरलैण्ड (हॉलैण्ड) से कवयित्री एवं कथाकार सुश्री पुष्पिता अवस्थी को 'प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान' से अलंकृत किया गया तथा सिडनी ऑस्ट्रेलिया की उल्लेखनीय साहित्यकार एवं हिंदी सेवी श्रीमती रेखा राजवंशी को 'हिंदी विदेश प्रचार सम्मान' से नवाज़ा गया।

पृ. 14

इस अंक में आगे पढ़ें : कार्यशाला/संगोष्ठी/सम्मेलन/व्याख्यान/पखवाड़ा पृ. 3-9 | लोकार्पण पृ. 9-13 | सम्मान एवं पुरस्कार पृ. 13-14 | श्रद्धांजलि पृ. 15 | संपादकीय पृ. 16

ISSN 16942485

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा अर्द्ध दिवसीय कार्यशाला : 'हिंदी भाषा और ऑनलाइन शोध'

21 अक्तूबर, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में एवं महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग के सहयोग से 'हिंदी भाषा और ऑनलाइन शोध' विषय पर अर्द्ध दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। ऑनलाइन कार्यशाला हेतु गुड़गाँव, हरियाणा से स्थानीय भाषा और अभिगम्यता, माइक्रोसॉफ़्ट के निदेशक श्री बालेंदु शर्मा दाधीच को विषय-विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रबंधक (शिक्षा) श्री निरंजन बिगन ने अपने संदेश में कहा "यह एक अत्यन्त सुनहरा अवसर है कि विद्यार्थियों को हर तरह से तैयार किया जा रहा है और इस कार्यशाला के माध्यम से, उन्हें वह योग्यता दी जा रही है, जिससे कि वे सही सामग्री का चयन कर पाएँ। यह सामग्री उनके लिए संजीवनी बूटी है।"

कार्यशाला में भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस का प्रतिनिधित्व कर रहे, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक, श्री बलवंत ठाकुर ने शोध के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की उपयोगिता का उल्लेख करते हुए कहा "इस कार्यशाला के द्वारा छात्रों को नए तकनीकों की जानकारी मिलेगी और उनके शोध-कार्य में एक विश्वसनीयता होगी।"

विषय-विशेषज्ञ श्री बालेंदु शर्मा ने हिंदी में ऑनलाइन शोध की संभावनाओं और चुनौतियों पर अपना वक्तव्य देते हुए ऑनलाइन शोध के लिए तकनीकी सुविधाएओं, उपयोगी सामग्री एवं व्यावहारिक परीक्षण पर बात की। उन्होंने कहा कि इन्टरनेट पर हिंदी में उन शोध सामग्रियों को प्राप्त करना संभव है, जिनकी ज़रूरत शोधार्थियों को होती है।

श्री दाधीच ने आठ डिजिटल माध्यम बताए, जिनके द्वारा हिंदी में काम किया जा सकता है। वे इस प्रकार हैं : इनस्क्रिप्ट, इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल, फ़ोनेटिक कीबोर्ड, ऑनस्क्रीन कीबोर्ड, टच कीबोर्ड, हस्तलिपि पहचान, डिक्टेशन और अनुवाद। उन्होंने डिजिटल माध्यमों से शोध करने की विधियों की चर्चा करते हुए कहा कि हिंदी भाषा नवीनतम तकनीकों के साथ जुड़ चुकी है। अब ज़रूरत है कि इन तकनीकों का उपयोग किया जाए। श्री बालेंदु जी ने ऑनलाइन शोध के कुछ माध्यम बताए, जो इस प्रकार हैं : एकेडमिया, माइक्रोसॉफ़्ट फ़ॉर्म्स, रिसर्चर आदि , जिनके द्वारा लोग अपने शोध को अन्यों के साथ साझा कर सकते हैं और वहाँ पाए जाने वाले शोधों का भी प्रयोग तथा सर्वेक्षण कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अनुवाद के ऑनलाइन साधन 'बिंग ट्रांसलेटर', 'गूगल ट्रांसलेट', 'आइएम ट्रांसलेटर' एवं 'बेबीलोन' हैं। ऑनलाइन शोध के लिए कई शोध-पत्रिकाएँ और वेबसाइट्स हैं। साहित्यिक शोध के लिए उपयोगी वेबसाइटें - कविता कोश, गद्य कोश, विश्व कोश आदि हैं।

अंत में, परिचर्चा-सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें मॉरीशस विश्वविद्यालय एवं महात्मा गांधी संस्थान से बी.ए. के विद्यार्थियों ने अपनी शंकाओं का समाधान किया। श्री दाधीच ने हिंदी में टाइप करने के विभिन्न लिंक्स बताए और व्यावहारिक रूप में टाइपिंग करना सिखाया। उन्होंने कहा कि इंटरनेट पर सामग्रियों की भरमार है, पर उनकी प्रामाणिकता को जाँचने की आवश्यकता है। लिंक चैक, लेखक के संबंध में उपलब्ध जानकारियाँ, लेखक की भाषा की परिपक्वता आदि के माध्यम से प्रामाणिकता जाँची जा सकती है। उन्होंने नकल और साहित्यिक चोरी जाँचने के विभिन्न लिंक्स भी दिए।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की प्रमुख संस्कृति अधिकारी, श्रीमती अनुपमा चमन ने अपने संदेश में कहा "भाषा एक सांस्कृतिक विरासत है, जिसे हमें आगे बढ़ाना चाहिए। भाषा एक वाहन है, जो संस्कृति को ज़िंदा रखती है। मुझे खुशी है कि प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय हिंदी को आगे बढ़ा रहा है।"

महात्मा गांधी संस्थान/रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान के महानिदेशक, श्री राजकुमार रामपरताब ने अपने संदेश में कहा "बी.ए. और एम.ए. के हिंदी छात्रों के लिए श्री बालेंदु शर्मा दाधीच की विशेषज्ञता का लाभ उठाने का विशेष अवसर है। वे हिंदी भाषा में ऑनलाइन शोध पर शोधार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। मुझे विश्वास है कि उन्हें ऑनलाइन शोध के नए उपकरणों की जानकारी मिलेगी। साथ ही, वे इंटरनेट का अधिक कुशलता से उपयोग करने में सक्षम होंगे।"

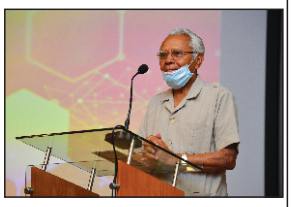

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य डॉ. उदय नारायण गंगू ने अपने संदेश में कहा "प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो निपुणता पाई जाती है, जो दक्षता पाई जाती है, वह किसी अवतार से कम नहीं है। आज संचार के जो माध्यम हैं, प्रौद्योगिकी का जो विकास है, उनसे शोध के नए क्षितिज खुले हैं।"

इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण देते हुए इस कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्यों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि "आजकल विद्यार्थी हिंदी भाषा से संबंधित अनेक विषयों में शोध करने के लिए इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। यह कार्यशाला शोधार्थियों की शोध-यात्रा को अधिक सहज बनाएगी।"

भारतीय उच्चायोग मॉरीशस की द्वितीय सचिव (भाषा व संस्कृति), श्रीमती सुनीता पाहूजा ने अंत में सभी आयोजकों को कार्यक्रम की सफलता हेतु बधाई दी तथा श्री बालेंदु शर्मा दाधिच के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनकी ज्ञानवर्धक प्रस्तुति की प्रशंसा की। धन्यवाद-ज्ञापन महात्मा गांधी संस्थान की हिंदी विभागाध्यक्षा, डॉ. अंजलि चिंतामणी तथा मंच-संचालन महात्मा गांधी संस्थान की वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. लक्ष्मी झमन ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

कार्यशाला/संगोष्ठी/सम्मेलन/व्याख्यान/पखवाड़ा

शिक्षा-रंजन : बॉलीवुड गीत-संगीत पर आधारित मल्टीमीडिया हिंदी शिक्षण कार्यशाला

21 नवंबर, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा शिक्षा-रंजन : बॉलीवुड गीत-संगीत पर आधारित मल्टीमीडिया हिंदी शिक्षण कार्यशाला वेब संगोष्ठी आयोजित की गई।

प्रोफ़ेसर एमिद्व ओसाका विश्वविद्यालय, जापान से पद्मश्री तोमियो मिज़ोकामी ने विषय-प्रवर्तन करते हुए जापान में हिंदी-शिक्षण की स्थिति पर बात की। उन्होंने कहा कि हिंदी फ़िल्मी गीतों के सुर और ताल बहुत आसानी से विद्यार्थियों के मुख पर आ जाती है। उन्होंने विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी सीखने के लिए गीतों के एक वाचन पुस्तिका को सबसे सरलतम माध्यम माना।

भारत सरकार के राजभाषा रेल मंत्रालय के पूर्व निदेशक श्री विजय कुमार मल्होत्रा मुख्य वक्ता रहे, जिन्होंने हिंदी गीतों में विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं को उजागर किया। उन्होंने वैश्विक स्तर पर हिंदी की गतिविधियों से सबको अवगत कराया।

यूनिवर्सिटी आफ़ पेंसिलवेनिया अमेरिका से सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री सुरेंद्र गंभीर ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि गीत और नाटक को मिलाकर हम भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया को और सबल बना सकते हैं।

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने समाहार करते हुए कहा कि हिंदी शिक्षण को आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा नई सोच की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी संस्थान, श्रीलंका की संस्थापक व निदेशिका श्रीमती अतिला कोतलवाला ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री पद्मेश गुप्त ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

वातायन की वैश्विक संगोष्ठी

4 दिसंबर, 2021 को वातायन - यू.के. द्वारा 'अनिल शर्मा 'जोशी' जी का काव्य-संसार' विषय पर आधारित वैश्विक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. पद्मेश गुप्त ने स्वागत-भाषण प्रस्तुत किया। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित दोहा सम्राट नरेश शांडिल्य ने कहा "अनिल जी जहाँ भी गए, उन्होंने भाषा का मोर्चा हो या सामाजिक परिदृश्य, उसको सुधारने की बात ही सोची और जुड़ाव की बात की।" कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने कहा "किसी भी कवि की कसौटी सम्वेदना होती है। वही तत्त्व कविता को अमरत्व प्रदान करता है। काश! अनिल जी 'फ़ुल टाइम' कवि ही होते। हिंदी कविता को आपकी ज़रूरत है।" श्रीमती अलका सिन्हा ने कवि अनिल जोशी का वातायन मंच पर स्वागत करते हुए कहा "फ़ासलों के दरमियाँ वे अपने समय से बिना हिले-डुले जैसे 'एक व्यक्ति में रहते हैं, कई एक व्यक्ति' उसी तरह अपने सारे दायित्वों को निभाते हुए वे नए-नए आयाम रचते जा रहे हैं।" उन्होंने ऑडियो-विज़ुअल के माध्यम से श्री जोशी की कविताओं में से तीन कविताएँ प्रस्तुत कीं।

इस अवसर पर प्रो. तोमिओ मिज़ोकामी, डॉ. लुद्मिला खोखलोवा, डॉ. सुरेंद्र गंभीर, श्री अनूप भार्गव, डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र, डॉ. अरुणा अजितसरिया, डॉ. जयशंकर यादव, श्री राजेश कुमार, डॉ. वेद प्रकाश, डॉ. निखिल कौशिक, डॉ. शैलजा सक्सेना, डॉ. वरुण कुमार, श्री विजय नागरकर, श्री विवेक मणि, श्री राजीव रावत, श्री सौभाग्य कोराले, तितिक्षा शाह, श्री संतोष पंत, डॉ. उषा उपाध्याय, श्री गंगाधर वानोडे, डॉ. साकेत सहाय, डॉ. राजवीर सिंह, श्री अरविन्द कुमार शुक्ल, श्रीमती आशा मोर, श्रीमती जय वर्मा, श्री शिव निगम, श्यामा सिंह, श्री रामेश्वर चंडक (माहेश्वरी), श्री अरुण सब्बरवाल, गीतू गर्ग, डॉ. मीरा सिंह, श्री स्वर्ण तलवार, डॉ. कृष्ण कुमार, शन्नो अग्रवाल, श्री महादेव कोलूर, दीक्षा गुप्ता आदि ने संगोष्ठी में भाग लिया। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. पद्मेश गुप्त ने किया।

कल्पना मनोरमा की रिपोर्ट

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

30-31 अक्टूबर, 2021 को जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय के सभागार में दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत जानकी देवी मेमोरियल महिला महाविद्यालय तथा साहित्य संचय शोध फ़ाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में 'समकालीन रचनाएँ एवं रचनाकार' विषयक दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ साहित्य संचय शोध संस्थान फ़ाउंडेशन, दिल्ली के अध्यक्ष श्री मनोज कुमार और राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. सुमन रानी द्वारा दीप-प्रज्वलन से किया गया। उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता प्रो. उमापति दीक्षित ने की। विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. आशीष कंधवे ने समकालीन कविताओं की पड़ताल व विश्लेषण करते हुए बाज़ार, सूचना-तंत्र, मीडिया, कहानी, संस्मरण साहित्य आदि को विवेचित किया। उनके अनुसार रचनाकारों को केवल प्रश्न ही नहीं खड़ा करना चाहिए, उसका समाधान भी सुझाना चाहिए।

इस अवसर पर प्रो. कृष्णचंद्र रल्हाण, अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. खेम सिंह डहेरिया, जानकी देवी महिला महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. स्वाति पॉल तथा हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. संध्या गर्ग भी उपस्थित थे। बीज वक्तव्य कॉलिज की सह-प्राचार्य प्रो. संध्या गर्ग ने दिया। अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के माननीय कुलपति प्रो. खेमसिंह डहेरिया ने केंद्रीय विषय पर सारगर्भित अभिमत प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 40 से अधिक पुस्तकों का लोकार्पण हुआ तथा देश भर के अनेक विद्वानों को उनके विशिष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

25-26 अक्टूबर, 2021 को हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज एवं दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। चार सत्रों में विभाजित इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में ब्रजभाषा और साहित्य में लोकरक्षक प्रभु श्रीराम पर केंद्रित अनेक बिंदुओं पर चर्चा की गई। उद्घाटन-सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रेम मंदिर, वृंदावन से पधारे डॉ. श्री वत्स गोस्वामी, हिंदुस्तानी एकेडमी के अध्यक्ष डॉ. उदय प्रताप सिंह, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉ. अवनिजेश अवस्थी, प्रसिद्ध रंगकर्मी अनिल शुक्ला तथा डॉ. आशीष कंधवे के साथ-साथ दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के कुलसचिव श्री आनंद मोहन ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के प्रो. उमापति दीक्षित की अध्यक्षता में आयोजित द्वितीय सत्र में अनेक गणमान्य चिंतकों ने अपने उद्बोधन से संगोष्ठी को सार्थक बनाया। प्रमुख वक्ताओं में हिमाचल विश्वविद्यालय से आई हुई डॉ. प्रीति सिंह तथा पी.जी.डी.ए.वी. कॉलिज, दिल्ली से डॉ. अवंतिका सिंह ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें दयालबाग के छात्र-छात्राओं के द्वारा मनमोहक गायन, भजन आदि की प्रस्तुति दी गई।

दूसरे दिवस अर्थात् 26 अक्टूबर, 2021 को तृतीय सत्र का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री डॉ. उषा यादव ने की। इस सत्र में डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष तथा डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह 'संजय' ने अपने विचार व्यक्त किए। चतुर्थ एवं अंतिम सत्र में उपस्थित विशिष्ट वक्ताओं, शोधार्थियों व विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

स्मृति व्याख्यान श्रृंखला-18 : 'डॉ. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी' पर संगोष्ठी

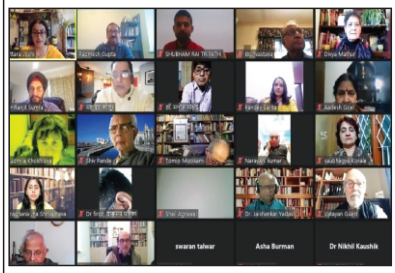

6 नवंबर, 2021 को वातायन, यू.के द्वारा स्मृति व्याख्यान श्रृंखला-18 : 'डॉ लक्ष्मी मल्ल सिंघवी' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ डॉ. कन्हैया लाल नंदन द्वारा सिंघवी जी के परिचय से हुआ, इसके पश्चात् उत्तरा सुकन्या जोशी ने पंडित विश्व प्रकाश जी द्वारा कम्पोज़ किया हुआ 'हिंदी है पहचान हमारी' गीत का गायन किया। डॉ. नंदा कुमार, श्री नारायण कुमार, डॉ. रणजीत सुमरा व डॉ. शिव पांडे ने अपने वक्तव्यों में डॉ. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी और कमला सिंघवी को जीवंत कर दिया। डॉ. निखिल कौशिक द्वारा समापन भी उतना ही खूबसूरत और सारगर्भित रहा।

साभार : दिव्या माथुर का फ़ेसबुक पृष्ठ

सोमदत्त बखोरी पर वेब-गोष्ठि

4 नवंबर, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से आयोजित साप्ताहिक वेब-गोष्ठि के दौरान मॉरीशस के प्रख्यात साहित्यकार श्री सोमदत्त बखोरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा की गई। हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक श्री गंगाधर वानोडे ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. जवाहर कर्नावट ने विषय प्रवर्तन किया। मुख्य वक्ता के रूप में श्री नारायण कुमार ने कहा कि सोमदत्त बखोरी जी सकारात्मक सोच और रचनात्मक दृष्टि के धनी व्यक्ति थे। हिंदी को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए उन्होंने विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन की ज़ोरदार वकालत की। मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर ने बखोरी जी को याद करते हुए कहा कि हिंदी के प्रति उनका समर्पण सर्वोपरि था। बखोरी जी मॉरीशस में घूम-घूमकर लोगों को लिखने की प्रेरणा देते थे।

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की द्वितीय सचिव श्रीमती सुनीता पाहूजा ने भारत सरकार द्वारा बखोरी जी को 'विश्व हिंदी सम्मान' से सम्मानित किए जाने का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बखोरी जी का लेखन आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देता था और भावी पीढ़ी को रास्ता दिखाता है।

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष, श्री अनिल जोशी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि *"मॉरीशस की धरती पर रहते हुए सोमदत्त बखोरी ने विविध विषयों पर हिंदी में नाटक लिखकर न केवल लोगों को हिंदी से जोड़ा, बल्कि हिंदी भाषा को भी समृद्ध किया है। हम हिंदी के इस अग्रदूत को उनकी पसंदीदा विधा में याद करते हुए लोगों को प्रेरित तो करेंगे ही, साथ ही हिंदी को भी गौरवांवित कर सकते हैं।"*

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, मॉरीशस के निदेशक श्री बलवंत ठाकुर ने बखोरी जी के नाटकों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि*"अपने विचारों को सामने लाने के लिए नाटक एक बहुत सशक्त माध्यम है। बखोरी जी ने जो रंगमंचीय नाटक लिखे, वे ज़्यादातर कानून संबंधित थे। बैरिस्टर होने के कारण मैं समझता हूँ कि उनके ज़्यादातर लेख गवर्नेंस संबंधित रहे।"*

विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने बखोरी जी के साहित्यिक अवदान की चर्चा की। उन्होंने कहा कि *"सोमदत्त बखोरी जी ने 70 वर्ष के जीवनकाल में 40 वर्ष हिंदी भाषा एवं साहित्य की नि:स्वार्थ सेवा की। वे सम्वेदनशील लेखक थे, जो दिल से लिखते थे।"* उन्होंने सोमदत्त बखोरी की विभिन्न साहित्यिक रचनाओं का उल्लेख करते हुए हिंदी के प्रति समर्पित उनकी जीवन-यात्रा पर प्रकाश डाला। श्री सोमदत्त बखोरी के पुत्र एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री संजय बखोरी ने पिता को याद करते हुए उन्हें आकाश पुरुष की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि उनकी कविता 'गंगा की पुकार' उनके हृदय से निकली हुई कविता थी। उन्होंने बताया कि *"उनका काम गीता के सूत्रवाक्य 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' से प्रेरित था। उन्होंने न केवल हिंदी को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी के उत्थान में उनका बहुत बड़ा योगदान था। सोमदत्त बखोरी का पुत्र होने के नाते मैं अपने पिता का वर्णन केवल 3 शब्दों में करना चाहूँगा-'सौम्य', 'सरल' और 'विनम्र', जो उनके व्यक्तित्व की तीन प्रमुख विशेषताएँ थीं।"*

कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका प्रो. बीना शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव, प्रो. वी. जगन्नाथ, श्री मोहन बहुगुणा, श्री जयशंकर यादव, श्री राजेश कुमार, श्रीमती सौभाग्य कोराले, श्री दीपक पाण्डेय, श्री अनुप भार्गव, श्रीमती कल्पना लालजी, श्री सुरेंद्र गंभीर व अन्य हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन केंद्रीय हिंदी निदेशालय की सहायक निदेशिका डॉ. नूतन पांडेय तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री सुशील धानुष ने किया।

साभार : हिन्दी मिलाप

संगोष्ठी एवं काव्य-गोष्ठी

24 दिसंबर, 2021 को गांधी सभागार में हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र., प्रयागराज एवं केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में आज़ादी के 75वें वर्ष के अवसर पर 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत 'स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी साहित्यकारों की भूमिका' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में पूर्व कैबिनेट मंत्री उ.प्र. सरकार, प्रो. नरेन्द्र सिंह गौर, एकेडेमी के अध्यक्ष डॉ. उदय प्रताप सिंह, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा 'जोशी', उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की कुलपति प्रो. सीमा सिंह, केन्द्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका प्रो. बीना शर्मा, डॉ. विनम्रसेन सिंह, देवेन्द्र प्रताप सिंह तथा काव्य-गोष्ठी में सम्मानित रचनाकार के रूप में गोरखपुर से श्रीमती चारुशीला सिंह, दिल्ली से श्री मनोज कुमार 'मनोज', श्री नरेश शांडिल्य और श्रीमती अलका सिन्हा तथा प्रयागराज से डॉ. श्लेष गौतम, श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल, श्री हर्ष कुमार सिंह 'हर्ष' और श्री केतन यादव ने काव्य-पाठ किया। इस अवसर पर बालकृष्ण भट्ट जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। केन्द्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका प्रो. बीना शर्मा ने अपनी पुस्तक 'सफ़र जारी है' की प्रति विशिष्ट अतिथियों को भेंट की। काव्य-गोष्ठी की अध्यक्षता श्री अनिल शर्मा जोशी ने की तथा संचालन श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

सरस काव्य-गोष्ठी

17 दिसंबर, 2021 को विदिशा के सम्राट अशोक अभियांत्रिकी महाविद्यालय के स्मार्ट क्लास हॉल में 'वसंत के हरकारे' संचयन का विमोचन एवं काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह पुस्तक सुप्रसिद्ध कवि शैलेंद्र चौहान की विभिन्न विधाओं में की गई रचनाओं पर आलोचनात्मक दृष्टि से लिखे गए विभिन्न लेखों का संचयन एवं संपादन है। इसका संपादन विदिशा के सुधी संपादक सुरेंद्र सिंह कुशवाह द्वारा किया गया है। पुस्तक का लोकार्पण मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष श्री पलाश सुरजन, सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. शील चंद पालीवाल, पाठक न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गोविंद देवलिया एवं वरिष्ठ कवि कालूराम पथिक के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

सर्वप्रथम वयोवृद्ध कथाकार सूर्यकांत नागर के आलेख 'गहरी जीवन दृष्टि के अन्वेषक कवि शैलेंद्र चौहान' का वाचन हुआ, जिसमें कहा गया कि शैलेंद्र चौहान ग्राम्य जीवन के कुशल चितेरे हैं। प्रो. असमुरारी नंदन मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी ऐसे रचनाकार जिसपर मुख्यधारा की आलोचना चुप है, उसपर किताब लाना एक साहस एवं संवेदनापूर्ण कार्य है। डॉ. शीलचंद पालीवाल ने शैलेंद्र चौहान के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर अपनी विशिष्ट राय रखी। उन्होंने कहा कि शैलेंद्र चौहान कथ्य को कला से ऊपर मानते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि वे कला को खारिज करते हैं। गोविंद देवलिया ने शैलेंद्र चौहान के कृतित्व में लोक एवं स्थानीयता को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करने वाली प्रतिभा को उजागर किया।

दूसरे सत्र में स्थानीय कवियों ने अपना काव्य-पाठ किया। इस अवसर पर श्री उदय ढोली, श्री दिनेश श्रीवास्तव, श्री सुरेंद्र श्रीवास्तव, श्री शाहिद अली, श्री निसार मालवी, श्री कृष्णकांत मूंदडा, श्री कालूराम पथिक, श्री सुरेंद्र सिंह कुशवाह, ममता गुर्जर आदि ने काव्य-पाठ किया। इंजीनियर ओपी श्रीवास्तव, डॉ. सुरेश गर्ग, डॉक्टर कुसुम गर्ग, प्रो. राजितराम द्विवेदी, श्री उपेंद्र कालुसकर, श्री सुलखान सिंह हाडा, श्री संतोष नेमा तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

वेब संगोष्ठी

07 नवंबर, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री सनातन रामायण मंडली, लामी, फ़िजी के अध्यक्ष, अखिलेश प्रसाद ने अपने विचार देते हुए फ़िजी तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रामायण के महत्त्व पर बात की और कहा कि उन्होंने रामायण से ही हिंदी सीखी है।

रामायण सेंटर फ़िजी के न्यासी, श्री रवि सिंह ने गिरमिट काल में फ़िजी में रामायण की स्थापना तथा उसके बढ़ते महत्त्व पर प्रकाश डाला। रामायण सेंटर, मॉरीशस की अध्यक्षा, डॉ. विनोद बाला अरुण ने कहा कि रामायण एक वैश्विक ग्रंथ बन गया है। उन्होंने मॉरीशस में रामायण सेंटर के प्रयासों को उजागर किया। सेवानिवृत्त अपर मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश शासन, श्री मनोज श्रीवास्तव ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम से जुड़कर कहा कि रामायण का फलक व्यापक है। पत्रकार और भाषाकर्मी, श्री राहुल देव ने रामायण में राम के चरित्र का वर्णन किया। फ़िजी में भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री पी.एस. कार्थिगेयन मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने रामायण के प्रचार में अपने सहयोग का आश्वासन देते हुए फ़िजी में उसकी स्थिति को रेखांकित किया। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष, श्री अनिल जोशी ने कार्यक्रम का समाहार किया। उन्होंने रामायण के वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, सुवा, फ़िजी के पूर्व निदेशक, श्री संतोष मिश्र ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

साहित्य-संवाद की गोष्ठियाँ

29 अक्टूबर 2021 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में अमृत महोत्सव की गतिविधियों के अन्तर्गत साहित्य संवाद समिति, भारतीय उच्चयोग तथा विश्व हिंदी सचिवालय के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया गया। समारोह में डॉ. उदय नारायण गंगू ने "राष्ट्रीय एकता में आर्य सभा की भूमिका" पर प्रकाश डाला और उन्होंने बताया कि आर्य सभा एक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था है, जिसका प्रथम उद्देश्य है संसार का उपकार करना और विश्व भर में एकता की स्थापना करना। श्री बलवंत ठाकुर ने "राष्ट्रीय एकता में नाटकों की भूमिका" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए और नाटक के स्वरूप पर चर्चा करते हुए कहा कि साहित्य की अनेक विधाएँ होती हैं, जिनमें नाटक एक है। नाटक के माध्यम से कलाओं का एक संगम बन जाता है। श्री निरंजन बिगन ने "राष्ट्रीय एकता में भारतीय डायस्पोरा की भूमिका" विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि मॉरीशस में आए मज़दूर दरिद्रता की स्थिति से पीड़ित होने के बावजूद एकता को महत्त्व देते थे। डॉ. वेद रमन पांडे ने "राष्ट्रीय एकता में हिंदी भाषा की भूमिका" पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि हिंदी केवल भारत की भाषा नहीं है। हिंदी मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम तथा अनेक देशों की भाषा है। हिंदी से परे भोजपूरी, मैथिली, राजस्थानी तथा ब्रजभाषा भी हैं।

26 नवंबर, 2021 को भारत की आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में साहित्य-संवाद के अंतर्गत वेब-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह का विषय "गिरमिटिया आंदोलन के आविर्भाव के साथ भारतीय प्रवासी देशों में भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार" रहा। इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ. श्रीमती सरिता बुधु, श्री सचिन जुतन एवं श्रीमती श्रद्धा गोबिन मन्ना रहे। समारोह में श्री बलवंत ठाकुर, श्रीमती सुनीता पाहूजा, डॉ. माधुरी रामधारी तथा हिंदी प्रेमियों की उपस्थिति रही। मुख्य वक्ता डॉ. श्रीमती सरिता बुधु ने बताया कि भोजपुरी भाषा एक संस्कार है इस भाषा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। उन्होंने कहा कि पूर्वजों ने भोजपुरी भाषा के अस्तित्व को सुरक्षित रखा। विभिन्न कठिनाइयों से गुज़रने के बाद भी पूर्वजों ने अपनी भाषा को नहीं त्यागा। श्रीमती बुधु जी ने बताया कि लोक-गीत और लोक-सांस्कृति भोजपुरी के महत्त्वपूर्ण भाग हैं। उन्होंने कहा 'यदि भोजपुरी को मान-सम्मान मिलेगा, तो हिंदी भाषा का मान-सम्मान भी बढ़ेगा'। उन्होंने उल्लेख किया कि भोजपुरी संगठन मॉरीशस में भोजपुरी भाषा के प्रचार-प्रसार में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता है। संगोष्ठी में स्वागत-भाषण डॉ. माधुरी रामधारी ने दिया और धन्यवाद-ज्ञापन श्रीमती सुनीता पाहुजा ने किया।

साहित्य-संवाद की समन्वयक, श्रीमती अंजू घरभरन की रिपोर्ट

अमृतराय शताब्दी स्मरण राष्ट्रीय संगोष्ठी

26-27 नवंबर, 2021 को तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार के पीजी हिंदी विभाग ने अमृतराय शताब्दी स्मरण के अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। मुख्य वक्ता प्रो. रविभूषण ने अपने विचार देते हुए कहा कि हिंदी साहित्य में कुछ रचनाकार सदैव उपेक्षा का शिकार रहे हैं।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार, हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. योगेंद्र महतो, डॉ. अरविंद कुमार, डॉ. आशुतोष, किशन कलजयी समेत कई वक्ताओं ने अमृतराय के व्यक्तित्व और कृतित्व के विविध आयामों पर प्रकाश डाला। मंच-संचालन सचिव, श्री दिव्यानंद ने किया।

साभार : सिल्क टीवी न्यूज़.कॉम

'वातायन-वैश्विक संगोष्ठी' के अंतर्गत 76वीं और 77वीं संगोष्ठियों का आयोजन

2 एवं 9 अक्टूबर, 2021 को सुश्री दिव्या माथुर के संयोजन में लन्दन स्थित 'वातायन-वैश्विक संगोष्ठी' के अंतर्गत चल रही साप्ताहिक संगोष्ठियों के क्रम में 76वीं और 77वीं संगोष्ठियों का ऑनलाइन आयोजन किया गया। 76वीं संगोष्ठी के अंतर्गत 'युवाओं में गांधी जी की प्रासंगिकता' विषय पर चर्चा की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विजय राणा ने की। चर्चा के प्रस्तोता आयुष चतुर्वेदी थे। श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव, श्री अभिषेक त्रिपाठी, श्रीमती मधु कुमारी चौरसिया और श्री आशीष मिश्रा कार्यक्रम के वक्ता रहे।

77वीं संगोष्ठी के अंतर्गत डॉ. पद्मेश गुप्त ने कादंबरी मेहरा जी के सद्य: प्रकाशित कथा-संग्रह 'नीला पर्दा' की भूमिका में लेखिका के कहानी विधा में अवदान पर प्रकाश डाला। मंच-संचालिका श्रीमती हंसा दीप ने कादंबरी जी के कथा-संग्रह 'नीला पर्दा' में संकलित कहानियों और उनकी विषय-वस्तुओं के बारे में विस्तार से बताया तथा कथाकार के बारे में समीचीन जानकारी भी प्रदान की। श्री जय प्रकाश पांडेय और डॉ. नूतन पाण्डेय कार्यक्रम के वक्ता थे। दोनों वक्ताओं ने कथाकार के कहानी-लेखन के विविध पक्षों पर ध्यान आकर्षित किया। कादंबरी जी ने बताया कि हिंदी में अपराध-विषयक साहित्य की बहुत कमी है और जो हिंदी साहित्य पश्चिम के देशों में पहुँचता है, उसका स्तर निम्न कोटि का होता है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी में तर्कसंगत साहित्य का अभाव है; उनके इस विचार से सहमति-असहमति की स्थिति बनी रही। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. पद्मेश गुप्त ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी-चुनौती और संभावनाएँ' विषयक राजभाषा सम्मेलन

13-14 नवंबर, २०२१ को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनारस में 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी चुनौती और संभावनाएँ' विषयक राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किया। श्री अनिल जोशी ने भारतीय डायस्पोरा की संख्या व उपस्थिति को देखते हुए विश्व के देशों का वर्गीकरण किया और उच्चायोग/दूतावास व भारत में हिंदी की ऐसी संस्थाएँ, जिनका विदेश में हिंदी के प्रचार में योगदान है, हिंदी शिक्षण, प्रौद्योगिकी, विदेशों में मीडिया, संस्कृति, बॉलीवुड आदि के संबंध में हिंदी की चुनौतियों और संभावनाओं पर चर्चा की। माननीय श्री अमित शाह ने भाषा को लेकर एक विस्तृत वक्तव्य दिया, जिससे भाषा प्रेमियों का मनोबल सुदृढ़ हुआ। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री आदित्यनाथ योगी ने भी भाग लिया।

साभार : श्री अनिल जोशी का फ़ेसबुक पृष्ठ

वार्षिक व्याख्यानमाला

27-28 नवंबर, 2021 को पूर्व सिविल सेवा अधिकारी मंच और संकल्प के संयुक्त तत्वावधान में नई दिल्ली स्थित एन.डी.एम.सी. कन्वेंशन सेंटर में दो दिवसीय वार्षिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय तकनीकी परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल सहस्त्रबुद्धे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुख्य वक्ता श्री संतोष तनेजा रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता व्यावसायिक शिक्षण और शिक्षण काउंसिल के अध्यक्ष निर्मलजीत सिंह कलसी ने की। प्रथम सत्र में डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने 'श्री राम जन्मभूमि और व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य' विषय पर और द्वितीय सत्र में श्री विष्णु प्रकाश जी ने 'भारत और पड़ोसी देश' पर अत्यंत गहन व्याख्यान दिए।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र में संकल्प फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष श्री संतोष तनेजा द्वारा 'व्यावसायिक शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ' विषय पर व्याख्यान दिया गया। माननीय कृष्ण गोपाल, एबेसडर विष्णु प्रकाश और सांसद श्री सुशील मोदी ने सामाजिक जीवन पर अपने व्याख्यान दिए। इस अवसर पर 'व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में भारतीय भाषाएँ' विषय पर चर्चा हुई। मंच-संचालन केन्द्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा 'जोशी' द्वारा किया गया।

साभार : श्री अनिल जोशी का फ़ेसबुक पृष्ठ

'गांधी : एक असंभव संभावना' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान

9 अक्टूबर, 2021 को हिंदी साहित्य सभा, हिंदू कॉलिज, दिल्ली द्वारा 'गांधी : एक असंभव संभावना' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में विभाग के प्रभारी डॉ. रामेश्वर राय ने स्वागत करते हुए विषय की प्रस्तावना रखी। हिंदी साहित्य सभा की संयोजक दिशा ग्रोवर ने साहित्य सभा का परिचय दिया। सुप्रसिद्ध चिंतक, लेखक एवं समाजकर्मी श्री तुषार गांधी ने अपने व्याख्यान में कहा कि गांधी अनुकरणीय लगते थे, क्योंकि वे जब कुछ कहते थे, तब जनता को उनके दर्शन का साक्षात् रूप उनके जीवन में दिखता था। इसलिए लोगों के बीच उनके बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रतियोगिता शुरू हो गई थी। लोकशाही में सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी नागरिक की होती है।

आज ऐसा प्रजातंत्र है, जहाँ नागरिक की भागीदारी नहीं है। जिससे प्रजातंत्र असंभव लगने लगा है तथा गांधी भी असंभव लगने लगे हैं। गांधी के बाद की व्यवस्थाओं ने गांधी को असंभव बना दिया है। इस अवसर पर एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया। आयोजन में विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. रचना सिंह, डॉ. हरीन्द्र कुमार और डॉ. पल्लव के साथ-साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थी, शोधार्थी और अन्य महाविद्यालयों के प्राध्यापक भी उपस्थित रहे। धन्यवाद-ज्ञापन द्वितीय वर्ष के छात्र श्री कमल नारायण ने किया।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

हैदराबाद में हिंदी पखवाड़ा

11 अक्टूबर, 2021 को हैदराबाद में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन से हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एन.एम.डी.सी. के उप-महाप्रबंधक श्री रुद्रनाथ मिश्र ने कहा कि हिंदी की प्रकृति समावेशी है। इसी प्रवृत्ति के कारण ही वह सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रही है। हिंदी में आज रोज़गार की संभावनाएँ बढ़ चुकी हैं, क्योंकि यह रोज़ी-रोटी से जुड़ चुकी है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना के सचिव एवं संपर्क अधिकारी श्री एस. श्रीधर ने कहा कि हिंदी हमारी अस्मिता है और भारतीय संस्कृति की आत्मा है। आज के तकनीकी युग में हिंदी भाषा बाज़ार-दोस्त और कंप्यूटर-दोस्त की भाषा बन गई है। उन्होंने आगे यह भी कहा कि दीपावली, दुर्गाष्टमी, स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस की तरह ही हिंदी दिवस को भी मनाना चाहिए।

सभा के प्रथम उपाध्यक्ष श्री अब्दुल रहमान ने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्वतंत्रता आंदोलन में संपूर्ण भारत को एकसूत्र में बाँधकर हिंदी ने महती भूमिका निभाई। सभा के प्रबंध निधिपालक श्री शेख़ मोहम्मद खासिम ने हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर प्रकाश डाला, तो कोषाध्यक्ष श्रीमती जमीला बेगम ने कहा कि हिंदी में जोड़ने की शक्ति है। उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो. संजय एल. मदार ने कहा कि एकता के सूत्र में बाँधने वाली भाषा है, हिंदी, जो हम सब की ताकत है। इस अवसर पर संपन्न भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। सभा के सभी विभागों के प्राध्यापक, छात्र, व्यवस्थापक गण, कार्यकर्ता गण, नगरद्वय के विभिन्न विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से पधारे अध्यापक तथा छात्र कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मंच-संचालन डॉ. विष्णु कुमार राय तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. साहिरा बानू बी. बोरगल ने किया।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

लोकार्पण

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार एवं पुस्तक लोकार्पण

30 नवंबर, 2021 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन के प्लेनरी हॉल में 'रामकथा में सुशासन' विषयक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार तथा 56 खंडों के 'श्रीरामकथा विश्वसंदर्भ महाकोश' के पहले खंड 'लोकगीत और लोककथाओं में श्रीरामकथा का संदर्भ' का लोकार्पण किया गया।

अंतरराष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका 'चाणक्य वार्ता' के संपादक डॉ. अमित जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री जी. किशन रेड्डी ने राम संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार के लिए साहित्यिक सांस्कृतिक शोध-संस्था के कार्यों की प्रशंसा की तथा विश्वास प्रकट किया कि 56 खंडों के महाकोश के प्रकाशन की यह विराट योजना आगे और भी तीव्र गति से विकसित होगी। उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय से पधारे भाषाचिंतक, प्रो. दिलीप सिंह ने की। 'रामकथा में सुशासन' विषय पर न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय की प्रो. बिंदेश्वरी अग्रवाल, 'उपमा' केलिफ़ोर्निया की प्रतिनिधि डॉ. अलका भटनागर एवं डॉ. हेमप्रभा तथा साठये महाविद्यालय, मुम्बई से पधारे प्रो. लोखंडे और डॉ. सतीश कनौजिया सहित विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में डॉ. विनोद बब्बर, डॉ. रंजय कुमार सिंह, डॉ. नारायण, डॉ. शीरीन कुरेशी तथा डॉ. आशा ओझा तिवारी ने रामराज्य और सुशासन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। इस सत्र की अध्यक्षता हंसराज कॉलिज, नई दिल्ली की प्रधानाचार्य प्रो. रमा ने की तथा संचालन डॉ. भावना शुक्ल ने किया।

समापन-सत्र में मुख्य अतिथि साध्वी प्रज्ञा ठाकुर और विशिष्ट अतिथि अश्विनी कुमार चौबे ने देश-विदेश के हिंदी सेवियों तथा प्रो. ऋषभदेव शर्मा सहित कई विशिष्ट विद्वानों को 'विश्व राम संस्कृति सम्मान' से अलंकृत किया। समापन-सत्र का संचालन प्रो. माला मिश्र ने किया।

साभार : हैदराबादसे.ब्लॉगस्पॉट

'पगडंडियों से आगे' और 'पंचम स्वर' का लोकार्पण

12 दिसंबर, 2021 को सी.डी देशमुख सभागार, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री अशोक पांडे का अभिनंदन समारोह एवं विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित युवा कवयित्री कोमल के दो काव्य-संग्रह 'पगडंडियों से आगे' और 'पंचम स्वर' का लोकार्पण किया गया। फ़िल्म एवं रंगमंच के सुप्रसिद्ध विभूति डॉक्टर संदीप मारवाह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य एवं शिक्षाविद् डॉ. अजय भांबी ने अशोक पांडे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत चर्चा की। वरिष्ठ कवि श्री शैलेंद्र शैल, डॉ. अशोक पांडे, सजग समाचार के संपादक श्री सचदेवा तथा युवा कवयित्री कोमल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. विवेक गौतम ने स्वागत-भाषण दिया और पुष्पगुच्छ, स्मृति चिह्न एवं शॉल भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर युवा कवयित्री कोमल की दो पुस्तकें 'पगडंडियों से आगे' काव्य-संग्रह और 'पंचम स्वर' हाइकु-संग्रह का लोकार्पण किया गया। श्री संदीप मारवाह ने ओजस्वी और सार्थक उद्बोधन से सभागार को चैतन्य कर दिया एवं एक नए उत्साह एवं ऊर्जा की अनुभूति कराई। कोमल की कविताओं का पाठ करके उन्होंने कवयित्री के उत्साह को बढ़ाया। कार्यक्रम के अगले भाग में प्रसिद्ध कवियों - सर्वश्री राकेश पांडे, श्री चंद्रशेखर आश्री, श्रीमती आभा चौधरी, श्रीमती शोभना मित्तल एवं श्रीमती श्रद्धा पांडे द्वारा रचना-पाठ किया गया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

आगरा महोत्सव, लोकार्पण एवं सम्मान-समारोह

23-31 अक्टूबर, 2021 को कोठी मीना बाज़ार मैदान, आगरा में 'आगरा महोत्सव' का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह में मुकेश कुमार ऋषि वर्मा द्वारा संपादित संकलन 'कालिका दर्शन' का लोकार्पण वरिष्ठ कलमकार श्री आदर्श नंदन गुप्त, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. भानु प्रताप सिंह, कवि दिनेश अगरिया, श्री विमल अग्रवाल, श्री निखिल शर्मा व श्री अवधेश कुमार निषाद मझवार जी द्वारा संपन्न हुआ। संकलन प्रकाशन में विशेष सहयोग डॉ. नरेश कुमार सिहाग व मनभावन प्रिंटर्स का रहा। इस अवसर पर बृजलोक साहित्य-कला-संस्कृति अकादमी के सौजन्य से आदर्श नंदन गुप्त जी को 'कलम साधक' उपाधि-सम्मान से सम्मानित किया गया। वहीं दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर देश भर के तमाम कलम साधकों को विभिन्न सम्मान प्रदान किए गए।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

'सफ़र जारी है' का लोकार्पण

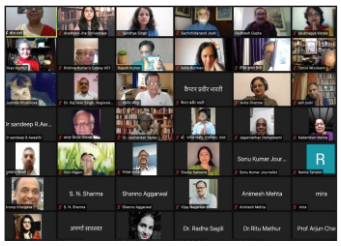

23 अक्टूबर, 2021 को 'वातायन प्रवासी लॉकडाउन 71वीं संगोष्ठी' के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका प्रो. बीना शर्मा की पुस्तक 'सफ़र जारी है' का लोकार्पण किया गया। श्री सच्चिदानंद जोशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार श्री कमल किशोर गोयनका ने की। डॉ. पद्मेश गुप्त ने कार्यक्रम के आरंभ में प्रो. बीना शर्मा और उनकी पुस्तक 'सफ़र जारी है' का परिचय दिया। प्रो. राजेश कुमार, डॉ. संदीप अवस्थी, डॉ. अनीता शर्मा, श्री रोहित कुमार हैप्पी और डॉ. पद्मेश गुप्त ने अपने वक्तव्य में पुस्तक में अन्तर्निहित वैचारिक बिंदुओं पर बात की। 'सफ़र जारी है' प्रो. बीना शर्मा के लेखों-आलेखों का अद्भुत संकलन है, जो जीवन के विभिन्न पक्षों पर उनके विचारों को हमारे सामने रखता है। वक्ताओं ने इस पुस्तक को भारत की सांस्कृतिक रीतियों और धरोहरों को संरक्षित करने वाला एक अनूठा संग्रह स्वीकार किया। निस्संदेह, प्रांजल और लोकभाषा में लोकजीवन के अनुभवों को सहजता और सुगमता से व्यक्त किया गया है। इस पुस्तक को एक दर्पण की भाँति निखारा गया है कि कोई भी इस ज्ञान-सागर में गोते लगाए बगैर नहीं रह सकता। जीवन के सूक्ष्मतम स्तरों पर अहसासों के ताने-बाने से एक ऐसी चादर बुनी गई है, जिसपर भारतीय जीवन की विहंगम झांकी देखी जा सकती है। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. संध्या सिंह ने किया।

डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र की रिपोर्ट
साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

'समकालीन साहित्य विमर्श' का लोकार्पण

21 दिसंबर, 2021 को साहित्यिक संस्था 'साहित्य मंथन' और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा - आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना के संयुक्त कार्यक्रम में गुर्रमकोंडा नीरजा की पुस्तक 'समकालीन साहित्य विमर्श' का लोकार्पण संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आरंभ दीप-प्रज्वलन तथा शिक्षा महाविद्यालय की प्राध्यापिका शैलेषा नंदूरकर द्वारा सरस्वती वंदना से किया गया। मुख्य अतिथि उस्मानिया विश्वविद्यालय की पूर्व प्रोफ़ेसर डॉ. शुभदा वांजपे ने कहा कि "रचनाएँ नवीन विषयवस्तु और शैलीय भंगिमा की दृष्टि से अभिनव हैं। उनके प्रयोगात्मक वैशिष्ट्य तथा आधुनिक वैचारिक दृष्टि को अभिव्यंजित करने में यह पुस्तक पूरी तरह सफल हुई है।"

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता माइक्रोसॉफ़्ट के प्रोग्राम मैनेजमेंट निदेशक श्री प्रवीण प्रणव ने कहा कि "इस पुस्तक में पाँच खंडों में सम्मिलित 24 आलेखों में विभिन्न विमर्शों को पुल के अलग-अलग भागों की तरह एक साथ जोड़ा गया है कि अपने स्वरूप में वे पूर्णता को प्राप्त कर लें।" कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अरबा मींच विश्वविद्यालय के पूर्व अंग्रेज़ी प्रोफ़ेसर डॉ. गोपाल शर्मा ने कहा कि यह उन विमर्शों का युग है, जिनको अब तक विमर्श के बाहर रखा जाता रहा और यह उन विमर्शों का सोदाहरण प्रस्तुतीकरण है। प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने कहा कि इस पुस्तक में बोलने और लिखने की भाषा के द्वैध को मिटाने का प्रयास किया गया है तथा अधिकतर आलेखों में विविध विमर्शों की भाषा पर अलग-अलग ढंग से प्रकाश डाला गया है। और यह पहचानने की कोशिश की गई है कि अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले रचनाकार किस तरह से हिंदी भाषा के दायरे को कितना विकसित कर रहे हैं। इस अवसर पर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा - आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना, हैदराबाद द्वारा निरंतर 66 वर्षों से प्रकाशित द्विभाषा (हिंदी-तेलुगु) मासिक 'स्रवंति' के नवंबर अंक का लोकार्पण भी किया गया। अनेक साहित्य प्रेमी, विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों, विश्वविद्यालयों के प्रोफ़ेसर तथा छात्रों और शोधार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन मिश्र धातु निगम के हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार उपनिदेशक डॉ. बी. बालाजी ने किया।

साभार : हैदराबाद से.ब्लॉगस्पॉट.कॉम

बाल कहानी-संग्रह का लोकार्पण

11 दिसंबर, 2021 को वातायन - यू.के. द्वारा आयोजित संगोष्ठी में डॉ. नासिरा शर्मा के बाल कहानी-संग्रह 'रंगीन परों वाला सपना' का विमोचन किया गया। अतिथियों का स्वागत डॉ. पद्मेश गुप्त ने किया। मुख्य वक्ता एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित डॉ. दिविक रमेश ने पुस्तक की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि "नासिरा जी का जुड़ाव मनुष्यों से ही नहीं, अपितु प्रकृति से भी घना है। इस संग्रह की कहानियाँ पढ़ते हुए लेखिका के व्यापक अनुभव की आहट सभी को मिलेगी।" ऋचा जैन ने डॉ. नासिरा शर्मा का परिचय देते हुए उनका वातायन के मंच पर स्वागत किया। डॉ. नासिरा शर्मा ने इस संग्रह को कोविड - 19 महामारी में लावारिस हुए बच्चों को समर्पित किया है। डॉ. नीरज शर्मा ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि बाल साहित्य रचने वाले लेखक को बाल मनोविज्ञान की जानकारी होना ज़रूरी है।

बच्चों को यथार्थ और सत्य सिखाने के लिए भारी-भरकम आदर्शवादी लेखन न होकर, कोमल मन का साहित्य ज़्यादा कारगर सिद्ध होगा, जैसा कि लेखिका नासिरा ने अपनी कृति 'रंगीन परों वाला सपना' में कहानियों को रचा है। श्रीमती पूर्णिमा वर्मन ने लेखिका के बारे में कहा कि "आपकी कलम सिद्ध कलम है, जो लिखेगी दिल तक ज़रूर पहुँचेगा।" इस अवसर पर बाल साहित्यकार सुहानी ने 'रंगीन परों वाला सपना' का पाठ किया।

समारोह में प्रो. तोमिओ मिज़ोकामी, डॉ. अरुण अजितसरिया, डॉ. के. के. श्रीवास्तव, डॉ. शिव पाण्डेय, श्री विवेक मणि, डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र, डॉ. लुझिला खोखलोवा, श्रीमती कल्पना मनोरमा, श्रीमती शैल अग्रवाल, तितिक्षा शाह, अर्पणा संत सिंह, श्रीमती आराधना श्रीवास्तव, डॉ. सुषमा देवी, श्री कैलाश बाजपेयी, सरिता पाण्डेय, श्री आदेश गोयल, डॉ. प्रभा मिश्रा, कादम्बरी, डॉ. जयशंकर यादव, डॉ. शैलजा सक्सेना, डॉ. वरुण कुमार, डॉ. फ़िरोज़ ख़ान, श्री विजय नागरकर, जय वर्मा, श्री अरुण सब्बरवाल, शन्नो अग्रवाल, आस्था देव, दुर्गा प्रसाद, क्षमा पांडे आदि उपस्थित थे।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग में पुस्तकों का विमोचन

21 नवंबर, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र द्वारा प्रकाशित 'समन्वय पूर्वोत्तर : संचयन' तथा 'हिंदी–खासी–गारो–जयंतिया–अंग्रेज़ी कोश' का विमोचन किया गया।

शिक्षा मंत्री, भारत सरकार, श्री धर्मेंद्र प्रधान ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिलांग में नए भवन के निर्माण से त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम राज्यों के हिंदी अध्यापकों को हिंदी सीखने में मदद मिलेगी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री, मेघालय सरकार, श्री कॉनराड के. संगमा ने अपने वक्तव्य में हिंदी को रोज़गार से जोड़ते हुए कहा कि भाषा संबंधी अवरोध को पार करना आवश्यक है तथा यह भाषा पूर्वोत्तर के भारतीय युवाओं को हिंदी भाषा सीखने का एक अवसर प्रदान करेगी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मेघालय सरकार के शिक्षा मंत्री, श्री लाक्मेन रिम्बुई ने अपने विचार व्यक्त करते हुए विभिन्न भाषाओं को जोड़ने में संस्थान की अहम् भूमिका पर बात की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं सह-संस्थापक – संस्कृत भारती, श्री चमू कृष्ण शास्त्री ने अपने उद्बोधन में भाषा के विभिन्न स्वरूपों पर बल दिया, जिनमें भाषा को प्रशासन से जोड़ना, समकालीन साहित्य-निर्माण करना, निरंतर शब्द-निर्माण करना और तकनीक का उपयोग करना प्रमुख हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका, प्रो. बीना शर्मा ने केंद्र की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अनुपम श्रीवास्तव ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष, श्री अनिल जोशी ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

श्री राजीव कुमार झा की पुस्तकें 'क्या लिखूँ मैं' और 'बोये हुए शब्द' का विमोचन

6 अक्टूबर 2021 को मोतिहारी के मुजीब गर्ल्स स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर बिहार सरकार के शिक्षा मंत्री विजय कुमार चौधरी के हाथों लेखक श्री राजीव कुमार झा की पुस्तकें 'क्या लिखूँ मैं' और 'बोये हुए शब्द' का विमोचन किया गया।

श्री राजीव कुमार झा ने बताया कि वे न केवल शिक्षक के तौर पर समाज में बदलाव लाना चाहते हैं, बल्कि साहित्य जगत् के लिए भी कुछ करना चाहते हैं। समारोह में मुजीब गर्ल्स स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर मंत्री प्रमोद कुमार, केसरिया विधायक शालिनी मिश्रा, ज़िलाध्यक्ष प्रकाश अस्थाना, मुखिया कुमार मनोज सिंह, ज़िला महामंत्री, डॉ. लाल बाबू प्रसाद, प्रवक्ता, श्री दिनेश कुमार, मुखिया श्री अरविंद कुमार सिंह आदि उपस्थित थे।

साभार : रिपब्लिकवर्ल्ड.कॉम

लेखिका रामेश्वरी 'नादान' की पुस्तकों का लोकार्पण

14 नवंबर, 2021 को दिल्ली के अशोक नगर के डी.पी.एम.आई. सभागार में वरिष्ठ लेखिका रामेश्वरी 'नादान' के उपन्यास 'वक्त कब ठहरा है' और बाल कहानी-संग्रह 'अक्ल बड़ी या भैंस' का लोकार्पण किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित लेखकों ने लेखिका रामेश्वरी नादान के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला और उनके लेखन को उनका देखा-भाला सत्य बताते हुए कहा कि उनके साहित्य में ताज़गी, उत्तराखंड की मिट्टी की खुशबू और भाषा में लोकतत्व झलकता है।

रामेश्वरी 'नादान' के उपन्यास 'वक्त कब ठहरा है' में कोरोनाकाल में जीवन और मृत्यु से संघर्ष करती लेखिका ने जीवन के सत्य और मूल्यों को उकेरा है। बाल कहानी-संग्रह 'अक्ल बड़ी या भैंस' में मुहावरों और लोकोक्तियों को कहानी के रूप में प्रयोग करके समझाया गया है।

इस अवसर पर वरिष्ठ कवि, साहित्यकार ललित केशवान, वरिष्ठ बाल साहित्यकार घमंडीलाल अग्रवाल, लेखक विनय सक्सेना, हेमा उनियाल, नरेंद्र उनियाल 'ननू', साहित्यकार डॉ.अखिलेश द्विवेदी 'अकेला' और डी.पी.एम.आई. के चेयरमैन डॉ. विनोद बछेती उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कवि-लेखक दिनेश ध्यानी ने किया।

साभार : संवाद जाह्नवी.कॉम

दो काव्य-संग्रहों का लोकार्पण

19 दिसंबर, 2021 को छत्तीसगढ़ के होटल गार्नेट में श्री विजय गुप्ता के काव्य-संग्रह 'वक्त के वक्तव्य' और शशिप्रभा गुप्ता का प्रथम काव्य-संग्रह 'यादों की गुदगुदी' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सरला शर्मा ने की तथा मैत्र यूनिवर्सिटी, रायपुर के कुलपति डॉ. के.पी. यादव मुख्य अतिथि रहे। श्री महेशचंद्र शर्मा, श्री गिरीश पंकज और श्री सुधीर शर्मा विशेष अतिथि रहे। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने क्रमश: लोकार्पित पुस्तकों पर अपने विचार साझा किए। आभार-प्रदर्शन समिति के सचिव श्री बलदाऊ राम साहू ने तथा मंच-संचालन डॉ इज़राइल बेग शाद और प्रीति वासनिक ने किया।

साभार : छत्तीसगढ़ मित्र.कॉम

आशा पाराशर के कहानी-संग्रह 'आदमखोर' का विमोचन

27 दिसंबर, 2021 को जयपुर की कलानेरी आर्ट गैलरी में आशा पाराशर के कहानी-संग्रह 'आदमखोर' का विमोचन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शारदा कृष्ण ने कहानी-संग्रह 'आदमखोर' पर चर्चा की। वरिष्ठ रंगकर्मी और लेखक डॉ. अशोक राही ने कहा कि आशा पाराशर की कहानियाँ समाज का दर्पण है।

महारानी कॉलिज की पूर्व प्राचार्या, डॉ. अमला बत्रा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सबको संबोधित करते हुए कहा कि लेखिका आशा पाराशर की कहानियाँ समाज के ताने-बाने को सुंदरता से दर्शाती है। हिंदी प्रचार संस्थान के अध्यक्ष, डॉ. अखिल शुक्ला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि लेखिका की कहानियाँ जीवन के विभिन्न चरित्रों की वास्तविकता को प्रदर्शित करने वाली है तथा सभी कहानियाँ पठनीय और संदेशपरक हैं।

साभार : ज़ीन्यूज़.इंडिया.कॉम

सम्मान एवं पुरस्कार

कवि सम्मेलन व सम्मान समारोह

26 दिसंबर, 2021 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा युवा साहित्यकार परिषद् के तत्वावधान में 'युवा साहित्यकार महोत्सव' का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत परिषद् के प्रधानमंत्री पंकज प्रियम ने किया।

सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि समाज में किसी भी प्रकार का परिवर्तन केवल साहित्य ही कर सकता है। साहित्य समाज का दर्पण भर नहीं, बल्कि समाज का निर्देशक भी है। उसमें समाज को बदलने की क्षमता होती है। महोत्सव की अध्यक्षा और सुप्रसिद्ध कथा-लेखिका डॉ. उषा किरण खान ने कहा कि युवाओं में साहित्य के प्रति उत्साह देखकर मन को बहुत प्रसन्नता होती है। युवाओं को साहित्य में अपना अधिकतम योगदान देना चाहिए। युवाओं में समाज को बदलने की असीम शक्ति होती है। इसका सदुपयोग करना चाहिए। उन्हें परिणाम की चिंता किए बिना सृजन के कार्य में पूरे मन से लग जाना चाहिए। 'साहित्य में युवाओं की भूमिका' विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए, विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में सहायक प्राध्यापक श्री वीर कुँवर सिंह और कवि डॉ. कुमार वरुण ने युवा साहित्यकारों के योगदान की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि आज के युवा, साहित्य और संस्कृति से उतना ही जुड़ाव महसूस करते हैं, जितना कि तकनीक से। उन्हें नव-लेखन के लिए अग्रसर होना चाहिए। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में बिहार सरकार में विशेष सचिव कवि दिलीप कुमार मुख्य अतिथि तथा वरिष्ठ कवयित्री डॉ. भावना शेखर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कॉलिज ऑफ़ कोमर्स के हिंदी विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ. अजय कुमार, कैमूर के श्री आलोक रंजन, दरभंगा से श्री भास्कर झा, जमशेदपुर की निवेदिता श्रीवास्तव, सुनीता बेदी तथा उपासना सिंहा, बेगूसराय के श्री अरमान आनंद, गया की रानी मिश्रा तथा श्री पंकज कुमार अमन, जहानाबाद के श्री नंदन मिश्र, श्री संतोष सागर तथा श्री संतोष कुमार, छपरा के श्री पीयूष रंजन आज़ाद, श्री राकेश विद्यार्थी तथा श्री शिवम् राज सिंह चंदेल, मधुबनी की श्वेता कर्ण, समस्तीपुर की अर्चना चौधरी, सीतामढ़ी की प्रीति सुमन, श्री मुकेश सत्यांश तथा श्री पंकज कुमार, मुज़फ़्फ़रपुर के श्री अमीर हमज़ा, नालंदा की अपलना आनंद, श्री कुमार राकेश ऋतुराज तथा श्री नवनीत कृष्ण, वैशाली के श्री प्रीतम कुमार झा तथा श्री सुशील चौधरी, लखी सराय के श्री अभिमन्यु प्रजापति, सीवान की कुमारी इला कृति समेत अनेक कवियों और कवयित्रियों ने काव्य-पाठ किया।

इस अवसर पर उपरोक्त युवा कवियों और कवयित्रियों के अतिरिक्त चर्चित युवा कवि कुंदन आनंद, श्री चंद्रबिंदु सिंह 'चंद्रविंद', श्री अमृतेश कुमार, श्री राम श्रींगार मैलक, श्री अंकेश कुमार, रेखा भारती, रश्मि गुप्ता, डॉ. कुंदन लोहानी, श्री अंकित मौर्या, डॉ. अनीता श्रीवास्तव, ईशिका राज, श्री सुप्रशांत सिंह मोहित तथा श्री रवि किशन शिवा को 'युवा साहित्यकार सम्मान' से अलंकृत किया गया। इस कार्यक्रम में अनेक गण्यमान्य अतिथि उपस्थित रहे। धन्यवाद-ज्ञापन उपाध्यक्ष श्री आनंद मोहन झा तथा मंच-संचालन श्वेता मिनी ने किया।

साभार : डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

श्री उदय प्रताप सिंह 'अनुभूति सम्मान' से अलंकृत

19 दिसंबर, 2021 को चेन्नै महानगर के डी.जी. वैष्णव कॉलिज के सभागार में 'अनुभूति' संस्था द्वारा आयोजित समारोह में सुप्रसिद्ध कवि एवं राजनेता श्री उदय प्रताप सिंह को 'अनुभूति सम्मान' से अलंकृत किया गया। हिंदी साहित्य में अप्रतिम योगदान के लिए प्रतिवर्ष यह सम्मान हिंदी कवि को प्रदान किया जाता है। गोपालदास नीरज, बालकवि बैरागी, माया गोविंद, अशोक चक्रधर जैसे कीर्ति-स्तंभ इस सम्मान से विभूषित किए जा चुके हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री रमेश गुप्त नीरद ने कहा कि 'हिंदीतर प्रदेश के साहित्यिक समाज की भावनाओं का प्रतीक है यह सम्मान'। श्री उदय प्रताप सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'कवि जनता का जन्मजात प्रतिनिधि होता है, इसलिए जनता के दुख-दर्द की बात करता है। कविता केवल मनोरंजन ही नहीं, समस्या का समाधान भी करती है।' इस अवसर पर श्री उदय प्रताप सिंह के कर-कमलों से महासचिव श्रीमती शोभा चौरडिया की पुस्तक 'भावों की पुड़िया' का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर अनेक हिंदी साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन महासचिव श्रीमती शोभा चौरडिया तथा धन्यवाद-ज्ञापन सचिव डॉ. सुनीता जाजोदिया ने किया।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

पुरस्कार व सम्मान समारोह

28 नबंबर, 2021 को लखनऊ में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कार व सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साहित्यकारों को सम्मानित करने के लिए उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित एवं उत्तरप्रदेश संस्थान के कार्याध्यक्ष श्री सदानन्द गुप्त उपस्थित रहे। नीदरलैण्ड (हॉलैण्ड) से कवयित्री एवं कथाकार सुश्री पुष्पिता अवस्थी को 'प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान' से अलंकृत किया गया तथा सिडनी ऑस्ट्रेलिया की उल्लेखनीय साहित्यकार एवं हिंदी सेवी श्रीमती रेखा राजवंशी को 'हिंदी विदेश प्रचार सम्मान' से नवाज़ा गया।

साभार : श्री तेजेंद्र शर्मा का फ़ेसबुक पृष्ठ

विश्व वागेश्वरी सम्मान-2021

27 दिसंबर, 2021 को प्रेरणा मीडिया संस्थान, नोएडा में विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा हिंदी के प्रख्यात लेखक और बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रोफ़ेसर अरुण कुमार भगत को प्रसिद्ध 'विश्व वागेश्वरी सम्मान' से अलंकृत किया गया। स्वागत-भाषण विश्व हिंदी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष डॉ. आशीष कंधवे ने दिया। प्रो. अरुण कुमार भगत तथा सारस्वत अतिथि प्रोफ़ेसर अनिल निगम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं राष्ट्रीय चिंतक डॉ. कृपाशंकर ने की।

यह सम्मान विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा देश-दुनिया में हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं और संस्कृति के विस्तार, विकास और उत्कर्ष में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है। प्रो. अरुण भगत को 'विश्व वागेश्वरी सम्मान' के अंतर्गत प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न, शॉल एवं अंगवस्त्र प्रदान किया गया। डॉ. कृपाशंकर ने प्रोफ़ेसर भगत के रचनात्मक और संगठनात्मक कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि बड़ी उपलब्धि हासिल करने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा की ज़रूरत होती है और यह काम प्रोफ़ेसर भगत ने कर दिखाया है। गौरतलब है कि प्रोफ़ेसर भगत ने आपातकाल समेत भारतीय भाषा, संस्कृति, राष्ट्रवाद समेत अनेक गंभीर विषयों पर गहन शोध किया है। उनकी लगभग दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कार्यक्रम में अनेक हिंदी विद्वानों की सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ओम शंकर ने किया एवं धन्यवाद-ज्ञापन सुश्री कोमल वर्मा ने किया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

डॉ. राकेश चक्र को 'बाल-साहित्य भारती सम्मान'

28 नवंबर, 2021 को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ के यशपाल सभागार में मुरादाबाद के साहित्यकार डॉ राकेश चक्र को बाल-साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 'बाल साहित्य भारती सम्मान' से अलंकृत किया गया। पुलिस विभाग से सेवानिवृत्त डॉ. राकेश चक्र की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के अध्यक्ष, डॉ. सदानंद गुप्त, निदेशक पवन कुमार, संस्थान की प्रधान संपादक डॉ अमिता दुबे, प्रमुख सचिव (भाषा) जितेंद्र कुमार एवं 'भारत भारती सम्मान' से सम्मानित पांडेय शशिभूषण शीतांशु समेत सभी सम्मानित साहित्कार एवं अतिथिगण उपस्थित थे।

साभार : साहित्यिक मुरादाबाद.ब्लॉग्स्पॉट.कॉम

अंतरराष्ट्रीय संस्मरण-लेखन प्रतियोगिता 2021 के परिणाम

श्रद्धांजलि

श्रीमती मन्नू भंडारी

15 नवंबर 2021 को हिंदी की सुप्रसिद्ध कहानीकार श्रीमती मन्नू भंडारी का 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 3 अप्रैल, 1931 को मध्य प्रदेश में मंदसौर ज़िले के भानपुरा गाँव में हुआ था । मन्नू भंडारी का जन्म तब हुआ जब भारतीय स्वतंत्रता का संघर्ष अपनी अंतिम चरम पर थी। उस समय मूनू जी का जन्म और गांधी जी के अनुशासन पर जन आंदोलन होना एक अनोखा संयोग है। मन्नू जी की बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था भारत के स्वतंत्रता-आंदोलन की अवधि में बीतीं। उनके जीवन का अधिकांश समय अध्ययन, अध्यापन तथा लेखन में व्यतीत हुआ। उन्होंने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। उन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजन पीठ की अध्यक्षा के पद को भी संभाला और रचना-क्षेत्र में भी बराबर सक्रिय बनी रहीं।

मन्नू जी से संबंधित एक विशेष बात यह है कि भारत की स्वतंत्रता के बाद उनकी साहित्यिक कृतियाँ खूब प्रगतिशील हुईं। मन्नू जी छठवें दशक के हिंदी कथा-साहित्य की उन सजग तथा कोमल कथाकारों में हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में समकालीन परिस्थितियों का सबल, निर्भीक और जीवंत चित्रण किया। इस तरह से वे भारतीय परतंत्रता तथा स्वतंत्रता से हमेशा जुड़ी रही। श्रीमती मन्नू भंडारी ने बदलते परिवेश में खुद को स्त्री मनोभावों की लेखिका के रूप में स्थापित किया। साहित्य जगत् में श्रीमती मन्नू भंडारी का प्रमुख योगदान कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में रहा। उनकी वस्तुनिष्ठता और नाटकीयता का दृढ़ निश्चय ही उनकी प्रमुख शैली रही। उनकी कहानियों में नारी के कई रूप चित्रित हुए हैं। उनकी नारियों में कुछ परंपरागत हैं, तो कुछ पढ़ी-लिखी, कामकाजी और एक विशिष्ट वर्ग की नारियाँ हैं। ऐसे विशिष्ट वर्ग की नारियाँ अपने अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की रक्षा और अपनी प्रतिष्ठा को लेकर सजग हैं। समय का समग्र राजनीति-बोध और समाज-बोध उनकी कथा कृतियों में प्रतिबिंबित हुआ है। उन्होंने नए-नए कथा प्रयोग किए और युगीन यथार्थ व नए मानवमूल्यों की अभिव्यक्ति की। अपनी लेखन-क्षमता से लेखिका श्रीमती मन्नू भंडारी ने जिस स्त्री-विमर्श के साथ बाल-विमर्श स्थापित किया, उसको मील का पत्थर कहा जाए, तो कम है। मन्नू भंडारी जी का मानना था कि साहित्य के प्रति स्त्री के योगदान को कभी भी नकार नहीं सकते। स्त्री ने अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की हैं। मन्नू जी की रचनाएँ अधिकतर तथ्यों पर आधारित रहीं। उन्होंने 'एक प्लेट सैलाब' (1962), 'मैं हार गई' (1957), 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' (1980), 'यही सच है' (1966), 'त्रिशंकु', 'आँखों देखा झूठ', 'अकेली', 'ईसा के घर इंसान', 'गीत का चुम्बन', 'एक कमज़ोर लड़की की कहानी', 'दीवार, बच्चे और बरसात', 'छत बनाने वाले', 'संख्या के पार', 'तीसरा आदमी', 'ऊँचाई', 'श्मशान', 'दो कलाकार', 'मजबूरी', 'नशा', 'रेत की दीवार', 'एखाने आकाश नाई', 'अभिनेता', 'जीती बाजी की हार', 'सयानी बुआ', पंडित गजाधर शास्त्री' जैसी कहानियों तथा 'आपका बंटी' (1971), 'एक इंच मुस्कान' (1962), 'महाभोज' (1979) और 'कलवा', 'अपना-अपना वक्तव्य' जैसे उपन्यासों की रचना की। इसके अतिरिक्त 'रजनीगंधा', 'निर्मला', 'स्वामी' एवं 'दर्पण' जैसी पटकथाओं का भी प्रणयन किया और 'बिना दीवारों का घर' एवं 'महाभोज का नाट्य रूपान्तरण' जैसे नाटक तथा 'एक कहानी यह भी' शीर्षक से आत्मकथा का सृजन करके हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उन्हें हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'शिखर सम्मान', राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा 'व्यास सम्मान' और उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुए।

साभार : विकिपीडिया एवं भारत डिस्कोवरी.ऑग

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius

फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर : @WHSMauritius
इंस्टाग्राम : WHS_08

संपादकीय

हिंदी में ऑनलाइन शोध

नवीन ज्ञान प्राप्त करने, सत्य की खोज करने, नए और पुराने सत्य के अंतर्संबंध को समझने, किसी व्यावहारिक समस्या का समाधान करने, पूर्वाग्रहों का निवारण करने एवं आंतरिक जिज्ञासा को संतुष्ट करने के उद्देश्य से विधिवत् अन्वेषण करना 'शोध' कहलाता है। शोधार्थी एक निश्चित लक्ष्य को सामने रखकर तथा एक विशेष दिशा में आगे बढ़ते हुए अनुसंधान करता है। परिणामस्वरूप, ज्ञान के नए आयाम उद्घाटित होते हैं और भाषा, संस्कृति, समाज, राजनीति, धर्म, अर्थ आदि से संबंधित उन्नति को नई दिशा प्राप्त होती है।

हिंदी भाषा में श्रेष्ठ विद्वानों ने अपना ज्ञान अंकित किया है। ज्ञान के इस सागर में गोता लगाने के उद्देश्य से शोधार्थी विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करते हुए अनुसंधान करता है। पुराने समय में, अनुसंधानकर्ता अपने विद्यालय अथवा निवास-स्थान के निकट के किसी पुस्तकालय में जाकर विविध पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, शब्दकोशों, विश्वकोशों, शोध-ग्रंथों तथा सर्वेक्षणों पर आधारित रिपोर्टों के पन्ने उलाटते हुए अनुसंधेय विषय से संबंधित ज्ञान प्राप्त करता था। वह कभी लेखागार की सहायता लेते हुए, तो कभी आर्थिक शक्ति के अनुसार मूल ग्रन्थ एवं सहायक ग्रन्थ खरीदकर शोध-कार्य को आगे बढ़ाता था। मित्रों या परिचितों से पुस्तकें उधार लेकर भी वह शोध करता था। आवश्यकतानुसार वह लोगों के घरों में पहुँचकर उनका साक्षात्कार लेता था या चाक्षुष-ज्ञान के आधार पर सामाजिक प्रवृत्तियों से सम्बंधित अन्तरंग और बहिरंग तथ्यों की खोज करके शोध विषय का अध्ययन-विश्लेषण करता था।

पिछले कुछ दशकों में एमफ़िल और पी.एच.डी के स्तर पर हिंदी में शोध करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई। अनुसंधान की पद्धतियों में भी नवाचार देखा गया। सन् 1969 में परमाणु युद्ध के आरम्भ होने की स्थिति में अमरीका ने सेना में सूचनाओं के आदान-प्रदान को सुलभ करने के उद्देश्य से 'अरपानेट' (एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी नेटवर्क) नामक कम्प्यूटर नेटवर्क का निर्माण किया था। उस समय किसी ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि कालान्तर में 'अरपानेट' 'इंटरनेट' नाम से प्रचलित होकर सभी क्षेत्रों में सूचनाओं का विश्व्यापी तंत्र बनेगा। ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, भौतिकी, रसायन शास्त्र, समाजशास्त्र, कला, भाषा, संस्कृति आदि हर विषय में अनुसंधान करने के लिए आज शोधार्थी इंटरनेट का प्रयोग कर रहा है।

प्रौद्योगिक विकास के साथ इंटरनेट पर हिंदी की उपस्थिति बढ़ी और हिंदी के उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि हुई। वर्तमान समय में टेक्स्ट, पावरपोईंट, ओडियो और वीडियो के रूप में इंटरनेट पर हिंदी में सूचनाओं का भण्डार है। शोधार्थी को पुस्तकालय में सुबह से शाम तक बैठने या शोध हेतु पुस्तकें खरीदने या उधार लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। वह अपने घर में कम्प्यूटर की स्क्रीन पर इंटरनेट द्वारा कई पुस्तकों को डाउनलोड करता है और कम खर्च में अपना शोध-कार्य सम्पन्न करता है। साक्षात्कार और प्रश्नावली की प्रक्रियाओं को भी वह अक्सर ऑनलाइन ही पूरा करता है।

हिंदी में ऑनलाइन शोध की अनेकानेक चुनौतियाँ हैं। वस्तुत: शोध-कार्य तथ्यों पर आधारित होता है। डॉ. एल. बी. राम अनन्त का मत है – "शोध सामग्री को व्यवस्थित रीति से संयोजित कर लेने के बाद तथ्यों को सादृश्य या सम्बन्ध की दृष्टि से छाँटा जाता है। समान तथ्यों के आधार पर विश्लेषण का कार्य होता है।"

अकादमिक शोध के लिए संकलित सामग्री का स्तरीय और विश्वसनीय होना अनिवार्य है। इंटरनेट द्वारा एकत्रित तथ्यों की प्रामाणिकता का परीक्षण करने के उपरान्त ही शोध विषय का सही विवेचन करना संभव है। विश्व हिंदी सचिवालय ने अक्टूबर 2021 को 'हिंदी में ऑनलाइन शोध' विषयक अर्द्धदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया था, जिसमें विषय-विशेषज्ञ श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने कविताकोश.कॉम, भारतडिस्कोवरी.कॉम, गद्यकोश.कॉम जैसे दर्शनीय वेबसाइटों अथवा शोधार्थियों द्वारा सर्वाधिक देखे जाने वाले वेबसाइटों से तथ्य-संचय करने का परामर्श दिया था। इंटरनेट पर उपलब्ध तथ्यों की जाँच हेतु उन्होंने लेखक के प्रोफ़ाइल को भी बारीकी से देखने का महत्त्व रेखांकित किया था। हिंदी में ऑनलाइन शोध सहज और कम खर्चीला अवश्य होता है। परन्तु, सत्य का अन्वेषण करने के लिए वर्च्युअल दुनिया से अलग वास्तविक जगत् में विचरण करना भी समुचित है। डॉ. विनय मोहन शर्मा के शब्दों में –

"अनुसन्धाताओं को कमरे से बाहर जन-समूह में जाकर प्रत्यक्ष अनुभव से सामग्री प्राप्त करनी पड़ती है। इसे अंग्रेज़ी में फ़िल्ड-वर्क और हिंदी में क्षेत्रीय कार्य कहते हैं। इसमें अपनी आँखों और कानों का उपयोग होता है।"

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित 'हिंदी में ऑनलाइन शोध' कार्यशाला के प्रारम्भ में सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य डॉ. उदय नारायण गंगू ने अपने संदेश में उल्लेख किया था कि आज भी बुज़ुर्गों के कंठों में ऐसी अद्भुत लोककथाएँ एवं मधुर लोकगीत हैं, जो इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं होते हैं। इन लोककथाओं एवं लोकगीतों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बुजुर्गों के निकट पहुँचना ही होता है। हिंदी में शोध के नवीनतम साधन के रूप में इंटरनेट का भरपूर उपयोग हो रहा है। परन्तु, अनुसंधाता को इंटरनेट के भूल-भुलैये में न पड़कर, वास्तविक स्थितियों से जुड़ते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता है। आभासी जगत् में सत्य की खोज करने के साथ ही, यदि शोधार्थी ऑनलाइन शोध की चुनौतियों को भली-भाँति समझेंगे और वैचारिक क्षमता एवं तार्किक शक्ति के साथ तथ्यों की जाँच करेंगे, तो हिंदी में उत्तम शोध-कार्य करने की संभावना बनी रहेगी।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव